



7 आशय स्पष्ट कीजिए –

1. दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो काल देवता की आँख बचा पाएँगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे।

उत्तर:- इन पक्तियों का आशय जीवन जीने की कला से है। लेखक के अनुसार दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। जो बुद्धिमान हैं वे इससे संघर्ष कर अपना जीवनयापन करते हैं। मूर्ख व्यक्ति यह समझते हैं कि वे जहाँ है वहाँ डटे रहने से काल देवता की नज़र से बच जाएँगे। वे भोले होते हैं उन्हें यह नहीं पता होता है कि जड़ता मृत्यु के समान है तो गतिशीलता जीवन है। जो हिलता-डुलता है, स्थान बदलता है वही प्रगति के साथ-साथ मृत्यु से भी बचा रहता है क्योंकि गतिशीलता ही तो जीवन है।

2. जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?.....मैं कहता हूँ कवि बनना है मेरे दोस्तो, तो फक्कड़ बनो।

उत्तर:- इस पंक्तियों का आशय सच्चे कवि बनने से है। लेखक के अनुसार यदि श्रेष्ठ कवि बनना है तो अनासक्त और फक्कड़ बनना होगा। अनासक्ति से व्यक्ति तटस्थ भाव से निरीक्षण कर पाता है और फक्कड़ होने से वह सांसारिक आकर्षणों से दूर रहता है। जो अपने कार्यों का लेखा-जोखा, हानि-लाभ आदि मिलाने में उलझ जाता है वह कवि नहीं बन पाता।

3. फूल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है। वह इशारा है।

इस पंक्ति का आशय सुंदरता और सृजन की सीमा से है लेखक के कहने का तात्पर्य यह है कि फल, पेड़ और फूल इनका अपना-अपना अस्तित्व होता है ये यूँ ही समाप्त नहीं होते हैं। ये संकेत देते हैं कि जीवन में अभी बहुत कुछ शेष है अभी भी सृजन की अपार संभावना है।

8. शिरीष के पुष्प को शीतपुष्प भी कहा जाता है। ज्येष्ठ माह की प्रचंड गरमी में फूलने वाले फूल को शीतपुष्प संज्ञा किस आधार पर दी गई होगी?

उत्तर:- ज्येष्ठ माह में प्रचंड गर्मी पड़ती है। ऐसी गर्मी में भी शिरीष के फूल खिले रहते हैं। ऐसी गर्मी में तो फूलों को मुरझा जाना चाहिए किंतु ये तो खिले रहते हैं और यह तभी संभव है जब पुष्प इतने ठंडे हो कि आग भी इन्हें छूकर ठंडी हो जाए। इसी आधार पर इन्हें शीत पुष्प की संज्ञा दी गई होगी।

9. कोमल और कठोर दोनों भाव किस प्रकार गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए।

उत्तर:- गांधी जी जन सामान्य की पीड़ा से द्रवित हो जाते थे परंतु वहीं अंग्रेजों के खिलाफ वज्र की भांति तनकर खड़े हो जाते थे। एक ओर तो गांधी जी के मन में सत्य, अहिंसा जैसे कोमल भाव थे तो दूसरी ओर अनुशासन के मामले में बड़े ही कठोर थे अतः हम कह सकते हैं कि कोमल और कठोर दोनों भाव गांधीजी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए।

• भाषा की बात

1. दस दिन फूले और फिर खंखड़-खंखड़ इस लोकोक्ति से मिलते-जुलते कई वाक्यांश पाठ में हैं। उन्हें छाँट कर लिखें।

उत्तर:- 1. ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले

2. धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना

3. न उधो का लेना न माधो का देना

4. वयमपि कवयः कवयः कवयस्ते कालिदासाद्य